

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अमृतधारिणोऽप्येवं वदन्तः ॥
 ताकाज्जनेव जेवन्ति मे गपियुष्यान्नागगनोदरि ॥ निर्मलाजैसावोऽं बरि विद्यावतकळासु ॥ १ ॥ पाहता
 येकसरेअचेज्योमीराटलीच्यायापउलिभुमी ॥ आढादलासहअस्मीनितवायेसुदला ॥ दिशावरिपुळे
 पउपपश्चिमेप्रगटलेरेखाचापा ॥ पुर्वेलखलसिबतनचपजमोपविचूळताचे ॥ गर्जनमांउलेगैसिरतेनेता
 रेवीहंगमवनचरा ॥ स्तब्धजालेआणिमयोरनसकरलागले ॥ जेसावर्णावपुनर्वसपुसिवर्णताजचेआ
 लेआकासि ॥ तैसामेपवळलासुधारसि ॥ उदारपणावेस्वचावेसेनासुदल्यामोदक्या
 अमृतधारा ॥ दृष्टीजालिप्रेतसागराकपीरुसा ॥ तेमहुतीर्थताकाज्जमिललेबहुरणप्रेतमंडल
 तिणेमरणपात्रेतेसकळउठिलेउसवाने ॥ निमतपुर्वताजालीअमृतदृष्टीवर्णोलागली ॥ मृष्टी
 आनंदेवोरसोलागलीअमरवारेलागली ॥ सादेखोनिदधापंधुआतयासिउपजलाहृदयाखाधु
 णतिजैसाहावक्त्याग्रंथुवरसिआपलेनरंगे ॥ १० ॥ अपूर्वकथयेतासूर्यपरियथेनाटलेआश्वर्षी ॥ संम
 इनबोळानधरेधीर्यह्मणानिबोलतोआह्मी ॥ वाक्मरुहकोव्यानकोउप्रेतेहोउनपउलेरणवकी
 तिसमस्तउठविलेसेवडीअमृतदृष्टीकउनी ॥ पुर्ववक्त्यावरलासिसुनाचाहिरितयाचेवरीशमराबोवैजा

(2)

जे बहुत सैं कार जाला वानरा ना॥ छिन्नमिन्न जाले॥ १॥ रासे माचे सें पट्टणिविदा ले मर ले धा पि॥
स्तिरु पर्ण जालिया विरुर पिवा बुवे स जाली॥ ये का स्मि समुदी पउली सिरे सा सिमि न गेली जव न॥
स्वा परे किते का चि रा ररे तो डु नने की॥ १॥ २॥ पा पउला मृता वकी जाली ते हि मे ते बहुत न सिली॥ ३॥ गि ध
वरि च्या वरी ने लि क स्वरण का उरी॥ तैया मा ने त मर छे दे रा स सा चे रा र पा ३॥ उत्त मा गे उ सं क लि क
इ ठा इ क वै द्र अंत र ले॥ किते क सह भया हि वे ग के क न र्ण या सि ले स ग के॥ जे से न व नि ता चे मो के न या सि
छा वे चि ना ही॥ पउले जे कुं म क र्ण ये उ र रि सा सि नि न के चि वा हे रि॥ मृ त्यु ले यु जी व अ ध वि वरी सा सि
ते सि ग वि जाली॥ ४॥ त्म र रि प उ ले र ॥ ५॥ ६॥ प रि प दा ॥ ७॥ अ ले र रि॥ ना ना म प ति त्या सि न दि॥ सा म धे र मे सि
ए सि परि जाली वानरा ते सा स को ण जी व विल ज मृ त॥ ८॥ ति च ना हि ते धे चि त्र वं ते चि त्र नि म लि के से॥ ९॥
जे नि जी व सें च रे ले हि ते ज मृ ते उ उ विले द डे ल का हि॥ ज या सि स र्व था रा बो ना हि ते जी व विले हे आ म्रि य॥
जा पि क या हि वे ग के स ग्रा म र ण भु मी चे र व के॥ सा म धे मी को न ये के मे के जालि क पी रा स सा ची॥ १०॥ जे
मे ये क पा पि मा चे पो डि ति ब ल ले ये सें य गी॥ चु र्ण हो उ न गे ले से व जी ये क डे प हो ती॥ ११॥ क्रि ये का व न वि
या म रि से बहुत जा न ट ट र ग्य मु से॥ य क त र क व र्ण को ब से डि ग हो उ न पउले॥ १२॥ ए सि परि जाली

२४
 कृपिताससातेमिबो न पउले प्रेते ॥ तेथे मेघवर्षला मृतनेरं डाचेन वै न वे ॥ २५ ॥ जाले पियुष पृथ्वीचे पर्व
 तणे नीजले प्रेतमै उळ सर्व ॥ रुक्ष वानर उठिले हे ज पुर्व नु उतिरासेस ॥ प्रेते होतिये कवाटे वरिज मृतवर्ष
 ले परि पाटे ॥ वानर पिय उठिले हे जा श्रिय मोठे वाउत आयकोनी ॥ जमृताचा तरि सर्व धा गुनु गेला परी
 निआनी प्राण ॥ परि जीत न नाग सेस हा व व नु न मि प्रा वी न कळे ॥ नहि चाले उचं वळत त ठा के ते निर
 स्त्राले निववी उर के ॥ दोसुन पाडि पार वि का वे का से रदा व पडे ॥ २६ ॥ युस रं उर स पा नि या तु नी लो डे ता
 गुळारिया सि गो उ वाटे ॥ पार वि या चे मुखे व उ व र ले व न पडे ॥ उदया च की उ ग वो न र वी लो प वि त्रा ते प्र
 काश राखवी ॥ आ गि जं य जा ते अं ध का रि गो ॥ २७ ॥ उ न म म ध म नौ का रु ङ जा ले उ न म त रो नि पे
 जी डे गे ले ॥ अध म म धे नि कु ड ले हे के द न पडे ॥ २८ ॥ जोज या चा स्था वि क गु नु या सि पा ल र क र श के
 ल को नु ॥ न हि सर्व धा वै र मि त्र प ण ने र कु डी न वी ॥ २९ ॥ या ये आ मु न्या वि ती आ श्रि य वा टे पु उ ती पु उ ती ॥
 अन त्या स भे द ला ग ता ती को न हे न कळे ॥ कृ पित आ स सा चो प्रे ते पृ थ्वी वारि ये क वा ट प उ ली या स ज मृ ता चा धा
 रि ॥ सि व न जाले परि वान र ची उ ठी ले ॥ ए से न व ल क र न श्रो ते स ना मं उ की जाले चो ल ते ॥ ज्या चे पृ थ्वी ल क्ष न स रि ते ॥
 त र ता प र म क ष ॥ ए से बो लि ल्या नं त रे स चा च तु र व क्क रे ता जा ला उ त र ॥ लो णे जो न हो ज भं त र लु क्क सि च
 क व ले ॥ स्तं ता चे पा ठि ये व रि पु त ल्या र वे व ति कु स रि ॥ वा ग वि क वा रो रि त्या वे ग वा अ से ॥ ३० ॥ यै का ज्ञा

ईडाकारणे अवतार धरिताना रायणे॥ तथा ये हे अवयवे करणे लीळा मोळे करुनी॥ १०॥ कपी उठले प्रजया
 मृते हे एसे चरि धले ईडा ते॥ पाशान तारिले नळाचे निहस्ते तथा च परि॥ जे से इव्य देउनि जाणुले समर्थे
 प्रिति पात्र वाढविले॥ ते से ईडा करी उठविले सखा नरो ते॥ ज्याचे रडे करुनि उदेंडे होति प्रपंच गर्भ जन्माडे॥
 पुनरपी प्रभुचे निवळ खंडे विध्वांसुनि जाति॥ ह्मणोनि तणे धरिता लिळा अवतारु करित दुष्टाचा संकाड
 फेडिला पृथ्वीचा नार सुख देत साधु ते॥ जो ससंकाड नि सांडिते करि पाक नि उठविले॥ इच्छा भव नि
 नवले कोनाचे काहि॥ ११॥ जे साचे ईडा पुला किं पि स म न ति इ पि न जं बु क नी॥ वरक उल छा वर्ण पाशा ती॥
 कोडे गाहिजे॥ मे प गर्जना शब्दा जी ते पें वळा व व व रुं डी॥ परि म यो र ना च ति दु पा डी प स तु न प द्वा ते॥
 ह्मणोनि कर्त्ता कार्यता श्रिरा मु ब व्य क्त स क व द मु॥ सर्वा त्मा पै सर्वा च मु भ क्त स प्र स न॥ बुडाले सं ग्राम
 पुर प्रवाहि वा न र त र ले ति तु के ही॥ पुर्वि ला परि स र्द य दे हि जाले धु प्ट पु ष्ट॥ ए सा प्र ता प श्रि रा मा चा री
 शरिका न वर्ण वे वा न्या॥ किं चित्त श न को टि सिं धु बु ड्री या व र ला वा ल्मी क रु पी॥ १२॥ हे से क्का बो ले परि सो न द्या
 ते से तो बाले॥ आता पुनरपी कथा चाले सहस्र वर ना र सि॥ इतु के जा ल या उ परि क था वें सि व र्त ली पु द्ग रि
 ति परि सा वे च तुरि चित्त दे उ न वा ड॥ किं सि दे हु नि आ ले उ स वा न र क पी ति बु द्दे हि क ल्मा न रु पी॥ जा वे स मु द
 त गो नि पु न र पी इ छि त रा मा स रि सो॥ स क व दे व तो उ व्वा द्द स्ती र यु ना था सि बि द्वा प ना कर ति॥ ए सि जे अ यो ध प्र ति॥

३४

सर्वथा कार्यसं पारो निजाली जीबाना सन पानी ॥ आता विलंबन करि ले प्रया नी उष्य करु ठहावे ॥ ध्या
 ज पुले आले विये समर सुमने आत्मा संदेश ॥ ते धनो निमस्त काचा ठार स्वर्गा रोहन केले पाहिले ॥ तुम
 याचे रणाचे निआधारे अधिकारि हो सुखे धोरे ॥ ऐसे विबुद्ध वरती तव रपा सागे रे बोली ले देवा प्रती
 ह्मणे सुर हो आता परमानंद पावो जे पल्लो अधिकार पदे ॥ समवेत प्रीति पाव वृंदे नोग नोगित जसा
 हो ते रावणादि क्रासे सत ववरि फले निवहन दिवस ॥ आता पुर्व स्थिति निर्देशा निज यर्मि सुखे जसा
 अनि आनंदे निजा श्रीमी निर्मय राज्य दुरातु श्री ॥ विसम नका आता आत्मी अयोध्या सजाउन ॥ ऐसे र
 तुनाथ बोलें तेणे आनंदे देव उचै बळ ॥ जय नय करी जे नि ले पीठि ली ठाळी ॥ आता जाली श्रीगमाची
 मुख्य करुनि विश्वनाथ विहंरि ॥ उठीले सकल सुरासना सचा वेस जीली ॥ सर्वोत्तमासि समय पाहुनि
 नियाळे आठु ठले वाहनी ॥ लागी दिव्य वाद्य ध्वनी मधुमार्ग लेंवीति ॥ लग्नचे चारि दिवस जाले व
 हाडि आपला लया रुज्जासि गेले ॥ ते से सुर समस्त गेले स्वर्ग प्रती ॥ किरुगे लीया त्रिवेनी तटाक
 स न पोहा जाय सकळीक ॥ ते से लंका परे दिहुनि कटक सुराचे स्वर्ग गेले ॥ ऐसे जाली या उपरि बिनीष
 ण उल्लासरी ॥ श्रीगमासं मुख प्रिय उत्तरि बोलता जाला ॥ ह्मणे सर्वेति माये जे वेध्वरि सितें संमि
 त्रास हित निज नारि ॥ बाला ने जील के मित रिप वित्र क्रावया ॥ मंगळ स्वाने करे नि श्रीगमा वर्ये जळंकार

ॐ गिका रावेनु ह्रीं ॥ उचिष्ट प्रसाद द्यावापसेमी प्रार्थित भसे ॥ शुभमहर्त्तयानं तरे प्रयान क्कावेद पालनरे ॥
पु ॥ कुरुदसम नारे वाळावे जयो जे प्रती ॥ एसि बिनीषणा चीव चने परिसि ली पुउरी कन यने ॥ मगत
य मतिहास्य वरने बोलना जाला ॥ ६॥ ह्मणे समइ उचिंतलं कना धातु तखि बोलीला सिसमर्था ॥ परिहेन
सउ कथा विंचित परिसा ॥ आहिवन वासा सनी पाछे तिपे जने पिता परलोका सि गेला मागे ॥ भरथ
तु प्रमातु कीहुनि वेगे आनविले होते ॥ तेहिनि परीत आयकानी असं तहु ख धरिले मनी ॥ बहु प्रार्थिजे
पुगे हित प्रधानी परिने येति चराया ॥ प्रीति पडि मरुआ मुवे गइ मुउने निआ पावे हे हर्द ॥ धरुनि गज्या
सिचली पाइ आम वेरु द्वीस येता ॥ कालिक ममिचि नु कुठी या आह्या जाली भैठो ॥ आम तेरे ते जे से
दृष्टी ने वरि सायेतली ॥ धरिली वल्कले योग पडावत दुध वळिल्या जठो ॥ न जाये निअ यो जे चिये काय
नंदि ग्रामि राहिला ॥ जाशयेतली आम चिज वा पकळी चेतु र्दश वर्गाची ॥ वाट पाहत जे सी गो चीव छे
हिचे पाहे ॥ जाह्या कारणे तेणे भरथे ये स्थिति असि जे उरा सचिते ॥ तरि सावसु निको ने मत्ते मंगळ स्नाने
रावी ॥ भरथ भेहि या अति मंगळ स्नाने सर्वास होति ॥ एसे जसे गाले कापती जाता येवकरी ॥ तुसे हर्द या
जे भावो तो सर्वथा सिद्धी सजावो ॥ कपी सहित बिस्मिरावो प्रिये वाये पुतावा ॥ ७॥ मंगळ स्नाने करवावी
दिव्य मुषणे दिव्या वरेयावी ॥ दिव्य वाये समर्पावी नाना रुचिची ॥ ८॥ सुग्रीवाची वरिसी पुताते आह्या

सपावेलले कराजा ॥ जैसे ब्राह्मण न सुखे जनन भोजा तसी होत से जाणा ॥ १ ॥ हसुप्रिवभेहा यनीधी विरधी लु
 दार बुद्धी ॥ याचे भेहेने सिद्धी बहून कार्ये गेली ॥ २ ॥ हे तरि विमिषणा मानसी वतुरा तु सर्व जानसी ॥ सुग्री वा
 न्याउ पकार आत्मा सी उतिर्पान केला ॥ ३ ॥ गतला आम वन मै नीदंगे पुत्र कच वसां उले मागे ॥ वेकडि करणी सं
 या मप्रसंगे याचि नारेखिली ओका ॥ ४ ॥ सासर्वेश्वरा जाधि राजु बोलिला विनीषणा उज्जु ॥ ते कोळी सुर्पा च
 तनु बु ॥ जानें उचै वजला ॥ ५ ॥ आपुली विरति परमुखे अश्रुता वाटे पिमुष्या सारिखे ॥ तुकिता तेणे सुखे मेरा
 दार हकु ॥ ६ ॥ पुढिल आपली स्तुती करी धूम्यति पोहनि ॥ ७ ॥ संसारी ॥ आणि परमुखे अपविर्ति तरी परम हनि
 मध्ये ॥ ८ ॥ ह्मणानि सुप्रिव बहून भाग्या याशि ॥ ९ ॥ या स्वदा या ॥ विरति वदला जो देवा या आदि देवो ॥ १० ॥
 एसित्पान वा या वचने कोनिया विभीषणे ॥ ११ ॥ पंडाकारे या वेस मस्तकपी ॥ सहिता ॥ १२ ॥ ह्मणचा
 लाकेलं केनी तरि हा करा विसे वका वरि ॥ १३ ॥ मित्र ॥ १४ ॥ गिउ पकारि मज जो उले निसखे ॥ १५ ॥ बोलोन भेहा
 निउतर सुप्रिव आरे येरि लाकरा ॥ सवळ कपिसि गजरेन पाला विनीषनु ॥ १६ ॥ लें के मध्ये जाउनि परवडि
 वोजा अनुक्रमे पृथक् पृथक् पुजा ॥ करिता जाला कपीची राजा तु न नरास साया ॥ १७ ॥ मरिरी लीरिय पुष्प
 लनेले पुर्ण उल्लजळ मार्जन जाले ॥ १८ ॥ उतमौ बरे उनिवै सविले समस्ता आसनी ॥ १९ ॥ लाविले वरन पति
 मळवाहिले मुषना वेस लाव ॥ २० ॥ रिय पुष्प माळां बाळ स मपिले समस्ता ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥
 विले हस्त जो ठुनि प्रार्थना बोले ॥ परम सदेवमी मज जो उले मित्र तुम्हा ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥

(5)

अह

गतिवैसीरत्नेडेव्यादेखिलीतुह्माऐसि॥ मजथोरकेलेमेनुसिमोतुलनापावलो॥ ७७॥ एसेबिमीपनुबोलबोले
 प्रितिनम्रताबहुसाल॥ सकबासवाठलेगोअमृतपानाहुनि॥ ७८॥ अतिमक्तीनावेबिमीपनुचादेसोनि
 सुखिववरेवाया॥ ह्मणेसरवाजंनमांतरिचारुणानबंधेभेट्लासि॥ ७९॥ पुर्वजन्मीगुसदानपडेतरियजन्मी
 गुसपनसापडे॥ तैसातुणानबंधेजोडेमित्रकुलबारिवा॥ ८०॥ आपलेनभार्ग्ययोगेजानिसमर्थान्येनिसंगे
 तुसरवाडेजोलासि॥ मरंगेरातलोतुसेनि॥ ८१॥ वधुवरावेमिबोनिमंडपीसुहृदसखेआनंदरुपी॥ स्मृति
 बोलतितैसेकपीनासेसंप्रेम॥ ८२॥ बिमीपणासुखियाप्रितिआगबीवरोनिप्रियवचनबोली॥ समाविसर्ल
 निप्रिरामाजवकीतात्कान्जाले॥ ८३॥ नरिंद्रासुखनवपेवनीसास्यंगनमस्कारपातलेधरनी॥ पुढेबिमी
 पनुजोउनिपानीउभाराहिलाअसे॥ ८४॥ तयामेतिबालेयासिंधुमणेवैसगातुआमुचाबंधु॥ परमवैष्णपरम
 साधुसराकावसुखिअसे॥ ८५॥ नाज्यकरितुजैकेराहजगिगंगोपृथ्वीसनाहे॥ जानिमासेनामकथाआहेलोकुत्र
 यामध्ये॥ ८६॥ मंदबुद्धगुरुअंगारकुभूगुनेरनकतसाहोशशंकु॥ गगनिआहेअर्कतंवरिगज्यकृती॥ ८७॥ आतासा
 हेतुआह्माआतादेइस्मरणअसोयावहृद॥ ८८॥ आसिप्रयानकरयेसमइसुमहर्तजसे॥ ८९॥ एसितुपापीववरेवा
 यावोपवाहेअमृताया॥ ९०॥ एरिबिमीपनुनचगहिवरायापावलापुस॥ ९१॥ आंगिरामांवउभेराहिलेउचंबबी
 निजेव्हाटले॥ वंठसड्ढरितलावाबोलेरपुनाथाप्रती॥ ९२॥ त्यातकाजीमुतिजिवनाचीरुखागोसिरपानेवि
 टवाठेवळा॥ वारिनिधीयाउचगुमळाहैदेसेपडेलजी॥ ९३॥ एरिदीधरिद्व्यायाकावबाभुकेलयासअमृत

नावडेढोळा॥ तापळाएवेळायेवेगळाहेवैसेयडेउलती॥ म्हणोनिजीबा-नातीबतुस्वामितुजवैसियापरित
 सेनमि॥ निरंतरअतर्यामीठाणठाकलेआहे॥ सुखतुसियावरणारुबिरीतुह्यासन्निधजमृतनंरीअसंउवाह
 तजसे॥ म्हणोनिदेवराहिलेपरि॥ १५॥ तक्वरणअथसुखावरोनिनानासुखेसाडाविवोवाळुनि॥ सनकादि
 कृत्याचेध्यानध्यातातिसर्वदा॥ १५॥ अहोजगजनकाजानबिरंगादयाब्धीभक्तजनभवसंगा॥ तुसाजया
 धपदमहिमागंगाजेनिपुनिपुण्यतोया॥ १६॥ यातेवहियालासिळा॥ तेताळाळगतमाळनिळा॥ चरण
 स्पर्शनिरेवरेहिकळापावोनिगेली॥ १७॥ परमपुरुषपुण्यनुमहदरिमायातीनषड्विकारविहितु॥ लिळाचरि
 तदाखविसिजतुजेसावर्ततआहे॥ १८॥ एसियासिपरमात्मातुलावेगळेनकिवेकदा॥ चितवरणीगतलेसुख
 सन्निधजसावेवाले॥ परिमजताग्योदयोनाहीरका॥ पतेसांडिलेदेउनिर्लंका॥ आताखातुसिरपुनायेका
 डेविसिटाकोनतेथे॥ १९॥ आताप्रयानकरासुमहु॥ मिळावितयेरनसागते॥ भेरावयात्रात्रुप्रनरथातेकोतु
 कपाहेन॥ २०॥ जोकपाळजयोध्यानगरतुहिमाळासनिवैसाळसिर॥ तोसमारंमविस्तारदेखेनजीढोळा॥ २१॥
 सुग्रिवादिवसमस्तकपीआसापावतिजानंरुपी॥ तेसामिहोदेवापुनरपीआज्ञावंदिनतुमवी॥ एसाबिसी
 षनुबोलबोलेमत्तिरसावेजानंरले॥ परिसोनिसकळसंतोडाचेपरमसाधुहणती॥ रघुत्तमुहणेसर्व
 थाजयोध्येनयावेजैकनाथा॥ समारंभरेखिजातेकथाआठवितराहिते॥ २२॥ एसियजालियावचनवेली॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com